अमीर खुसरो

कव्वाली

छाप[1]-तिलक तज दीन्ही[2] रे, तोसे नैना[3] मिला के।
प्रेम बटी[4] का मदवा[5] पिलाके
मतवारी[6] कर दीन्ही रे, मोसे नैना मिला के।
खुसरो निज़ाम पै बलि[7]-बलि जइए,
मोहे सुहागन[8] कीन्ही रे, मोसे नैना मिला के।

गीत

काहे[9] को ब्याही बिदेस[10] रे,
लखि[11] बाबुल मोरे!
हम तो बाबुल तोरे बागों की कोयल
कुहुकत[12] घर-घर जाऊं, लखि बाबुल मोरे।
हम तो बाबुल तोरे खेतों की चिड़िया,
चुग्गा[13] चुगत[14] उड़ि जाऊं, लखि बाबुल मोरे।
हम तो बाबुल तोरे बेले[15] की कलियाँ,
जो मांगे चली जाऊं, लखि बाबुल मोरे।
हम तो बाबुल तोरे खूंटे[16] की गइया,
जित हांको[17] हंक जाऊं, लखि बाबुल मोरे।
लाख की बाबुल गुड़िया जो छाड़ी,
छोड़ि सहेलिन का साथ, लखि बाबुल मोरे।
महल तले[18] से डोलिया जो निकली,

1. धार्मिक प्रतीकों के चिह्न जिन्हें वैष्णव लगाते हैं। 2. त्याग देना (तज दीन्ही) 3. आँखें 4. जड़ी-बूटी 5. रस, मदिरा 6. मतवाली 7. बलिहारी 8. सौभाग्यवती, विवाहित स्त्री जिसका पति जीवित हो 9. क्यों 10. परदेश 11. देखो 12. कोयल की आवाज 13. दाना 14. खाना 15. लताएँ 16. लकड़ी का खूँटा जिसमें गाय आदि जानवर बाँधे जाते हैं 17. गाय आदि जानवरों को चलाना 18. नीचे

भाई ने खाई पछाड़, लखि बाबुल मोरे।
आम तले से डोलिया जो निकली,
कोयल ने की है पुकार, लखि बाबुल मोरे।
तू क्यों रोवे है, हमरी कोइलिया,
हम तो चले परदेष, लखि बाबुल मोरे।
नंगे पाँव बाबुल भागत[19] आवै,
साजन डोला लिए जाय, लखि बाबुल मोरे।।1।।

बहुत कठिन है डगर[20] पनघट[21] की
कैसे मैं भर लाऊँ मधवा[22] से मटकी।
मोरे अच्छे निज़ाम पिया –
कैसे मैं भर लाऊं मधवा से मटकी
जरा बोलो निज़ाम पिया,
पनिया भरन को मैं जो गई थी –
दौड़ झपट मोरी मटकी-पटकी। बहुत कठिन है –
खुसरो निज़ाम के बलि-बलि जाइये
लाज राखे मोरे घूंघट[23] पट[24] की – ।।3।।

पहेलियाँ

बाला[25] था जब सबको भाया[26]। बढ़ा हुआ कछु काम न आया।।
खुसरू कह दिया उसका नाँव[27]। अर्थ करो नहिं छोड़ो गाँव।।1।।

दीया

सावन भादों बहुत चलत है माघ पूस में थोरी।
अमीर खुसरों यो कहे तू बूझ पहेली मोरी।।2।।

मोरी

19. भागकर, दौड़कर 20. रास्ता 21. पानी भरने का घाट 22. मधु, शहद 23. साड़ी का किनारा जिससे स्त्री चेहरा (मुँह) ढ़क लेती है 24. पर्दा, आड़ 25. छोटा 26. अच्छा लगा 27. नाम

एक नार पिया को भानी। तन वाको सगरा[28] जों पानी।।
आब[29] रखे पर पानी नाँह। पिया को राखे हिर्दय माँह।।
जब पी को वह मुख दिखलावे। आपहि सगरी पी हो जावे।।3।।

दर्पण

एक थाल मोती से भरा। सबके सिर पर औंधा धरा।।
चारों ओर वह थाली फिरे। मोती उससे एक न गिरे।।4।।

आकाश

एक नार ने अचरज किया। सांप मार पिंजरे में दिया।।
जों जों सांप ताल को खाए। ताल सूख सांप मर जाए।।5।।

दीया बत्ती

आदि कटे सो सब को पाले। मध्य कटे से सब को मारे।।
अंत कटे से सबको मीठ। खुसरू वाको[30] आँखों दीठा[31]।।6।।

काजल

कह मुकरियाँ

बरसा बरस वह देस में आवे। मुँह से मुँह लगा रस प्यावे।।
वा खातिर में खरचे दाम। ऐ सखी साजन ना सखी आम।।1।।

आँख चलावे भौं मटकावे। नाच कूद के खेल खिलावे।
मन में आवे ले जाऊँ अंदर। ऐ सखी साजन ना सखी बंदर।।2।।

नित मेरे घर वह आवत है। रात गए फिर वह जावत है।।
फँसत अमावस गोरि के फंदा। ऐ सखी साजन ना सखी चंदा।।3।।

एक सजन वह गहरा प्यारा। जा से घर मेरा उजियारा।।
भोर भई तब बिदा मैं किया। ऐ सखी साजन ना सखी दिया।।4।।

---

28. सब, समस्त 29. चमक, कांति 30. उसको 31. दीखना

दोहे

गोरी[32] सोवे सेज[33] पर मुख पर डारे केस[34],
चल खुसरो घर आपने रैन[35] भई चहुँ देष।।1।।

खुसरो रैन सोहाग की, जागी पी[36] के संग।
तन मेरो मन पीऊ[37] को दोऊ भए एक रंग ।।2।।

देख मैं अपने हाल[38] को रोऊं, जार-ओ-जार।
वे गुनवन्ता[39] बहुत है, हम हैं औगुन[40] हार ।।3।।

चकवा चकवी[41] दो जने इन[42] मारे न कोय।
ईह मारे करतार[43] कै रैन बिछोही होय ।।4।।

सेज सूनी देख के रोऊं दिन-रैन।
पिया पिया कहती मैं पल भर सुख न चैन ।।5।।

32. गौर वर्ण वाली 33. पलंग, कब्र 34. बाल 35. रात 36. प्रियतम (ब्रह्म) 37. प्रियतम, पति 38. दशा, अवस्था 39. गुणवान 40. अवगुण 41. नर एवं मादा सुरखाब पक्षी 42. यह 43. विद्याता